AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. सोहन कुमार मिश्र
सहायक प्राध्यापक–संविदा, शिक्षा अध्ययनशाला,
शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय
बस्तर, जगदलपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में बस्तर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण विधि के माध्यम से किया गया। न्यादर्श के लिए 100 विद्यार्थियों का चुनाव किया गया, जिनमें से 50 शासकीय एवं 50 अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का चुनाव किया गया। शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। आंकडों के संकलन के लिए शोधकर्ता ने स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया। आँकडों के विश्लेषण के लिए टी परीक्षण, का प्रयोग किया गया है। शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की जांच विभिन्न उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के आधार पर किया गया। शोध विश्लेषण से यह जानकारी प्राप्त हुई कि बस्तर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। बस्तर जिले के अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों की तुलना में बेहतर है।

मुख्य शब्द

विद्यालय, विद्यार्थी, शैक्षणिक, बस्तर.

प्रस्तावना

शिक्षा जीवन का आधार है। शिक्षा राष्ट्रीय उद्देश्य की पूर्ति का एक उत्तम साधन है, शिक्षा का उद्देश्य प्राणी को ज्ञानी विचारवान बनाना है। शिक्षा व्यक्ति समझ पैदा कर निष्पक्ष निर्णय लेने की क्षमता का विकास करती है। शिक्षा से अच्छी नागरिकता का विकास होता है। प्राचीन भारत में अशिक्षित होना मृत्यु के समान माना जाता था। इतना ही नही ज्ञान को वैदिक काल में तृतीय नेत्र के समान माना जाता था। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो दुनिया व मनुष्य को बेहतर बनाती है। व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा के महत्तव को समझना आवश्यक है। प्रत्येक राष्ट्र के विकास उसके शिक्षा पर ही आश्रित होती है। शिक्षा के आधार पर ही किसी राष्ट्र का मूल्यांकन किया जा सकता है। भारत प्राचीन काल से ही शिक्षा के आधार पर जगतगुरु के नाम से जाना जाता रहा है। जन्म के बाद से ही जीवन के आवश्यक मूल्य शिक्षा के माध्यम से प्रदान करना प्रारंभ हो जाता है। तत्पश्चात् विद्यालय की औपचारिक शिक्षा जो उसे जीवकोपार्जन हेतु तैयार करती है।

अध्ययन की आवश्यकता

माध्यमिक विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा से औपचारिक शिक्षा का प्रारम्भ होता है, तथा कहा जाता है, कि

माध्यमिक शिक्षा से ही शिक्षा की बोधात्मक स्तर की नींव रखी जाती है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए माध्यमिक शिक्षा आवश्यक है, यह वह चरण है, जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुंचता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 के अनुसार 14 वर्ष की उम्र तक के समस्त बच्चों के लिए माध्यमिक शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था की गयी है। इस उद्देश्य हेतु तथा माध्यमिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए शासकीय स्तर पर अनेक विद्यालय तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति कर शिक्षा की व्यवस्था की गयी है। माध्यमिक शिक्षा को शिक्षा की आवश्यक कड़ी स्वीकार करते हुए सरकार द्वारा किये गये अनेक प्रयास किये जिनमें प्रमुख हैं:–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, (1986) आचार्य राममूर्ति शिक्षा समिति, (1990) जनार्दन रेड्डी शिक्षा समिति, (1992) जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, (1994) मध्याह्न भोजन येाजना, (1995) (संशोधित 2004) सर्व शिक्षा अभियान, (2001) जैसे कई योजनओं/आयोगों/समितियों/ कार्यक्रमों/ अभियानों के अतिरिक्त अन्य प्रयासों द्वारा माध्यमिक शिक्षा की की स्थिति सुधारने का प्रयास किया गया। इसके अतिरिक्त मध्याह्न भोजन कार्यक्रम, पाठ्य पुस्तक एवं परिधान दिया जाता है। इसके साथ ही साथ गरीब तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों को अलग से छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

इन सब प्रयासों के बावजूद भी इन शासकीय विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में कम होती है।

वित्तीय अनुदान, प्रशिक्षित शिक्षक, अधिगम सामग्री इत्यादि प्राप्त सर्व सुविधायुक्त होने के बावजूद क्या कारण है, कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की अपेक्षा गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थी ज्यादा प्रतिभाशाली, चुस्त एवं बुद्धिमान देखे जाते हैं? इसकी सत्यता की परख करने हेतु, शोधकर्ता ने उपरोक्त दोनों प्रकार के प्राथमिक विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करने का निश्चय किया।

संबंधित शोध अध्ययन

1. जय (1990) ने अपने अध्ययन द्वारा यह पाया कि शैक्षिक उपलब्धि का बालकों के अभिलाषा स्तर पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।
2. सूत्रधार पी.के. (1982) ने अपने अध्ययन में पाया कि संसाधन युक्त बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि संसाधन विहीन बच्चों की तुलना में अधिक होती है।

उपरोक्त अध्ययनों से यह बात उजागर हुई है, कि संसाधन से बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उपलब्धि से बालकों के अभिलाषा स्तर पर प्रभाव पड़ता है।

समस्या कथन

''बस्तर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तलुनात्मक अध्ययन।''

शासकीय माध्यमिक विद्यालय

प्रस्तुत शोध में सरकारी शासकीय माध्यमिक विद्यालय से तात्पर्य शासन द्वारा पंजीकृत एवं अनुदान प्राप्त विद्यालयों से है।

अशासकीय माध्यमिक विद्यालय

प्रस्तुत शोध में अशासकीय माध्यमिक विद्यालय से तात्पर्य विभिन्न संगठनों द्वारा संचालित निजी विद्यालयों से है।

शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तुत शोध में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से प्राप्त प्राप्तांकों से है।

उद्देश्य

इस अध्ययन के निम्न उद्देश्यों निर्धारण किये गये हैं–

1. बस्तर जिले के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
2. बस्तर जिले के अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
3. बस्तर जिले के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

शोध की परिकल्पना

इस शोध हेतु शोधकर्ता ने निन्मलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है:

1. बस्तर जिले के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. बस्तर जिले के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. बस्तर जिले के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों को चुना गया जिनमें से 50 शासकीय एवं 50 अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियो को चुना गया।

परिसीमन

प्रस्तुत शोध की सीमाएं निम्नलिखित हैं:

1. अध्ययन में बस्तर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यामिक विद्यालयों को शामिल किया गयाा है।
2. अध्ययन में उपरोक्त विद्यालयों के केवल कक्षा 8 के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में शामिल किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य बस्तर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना है। शोधकर्ता ने पूर्व में निर्धारित किये गये उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के अनुसार परीक्षण में प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण निम्नानुसार है:

उद्देश्य 1– बस्तर जिले के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।

परिकल्पना 1– बस्तर जिले के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शोधकर्ता द्वारा विकसित स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (पूर्णांक–25) पर बस्तर जिले के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंको का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण के लिए प्राप्तांको के आधार मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गयी जो निम्न सारणी–1 में दिया गया है।

सारणी 1: बस्तर जिले के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त अंको का मध्यमान एवं मानक विचलन

क्र.	परीक्षण का नाम	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमाान (M)	मानक विचलन	विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों का प्रतिशत	मानक सारणी पर प्राप्त परिणाम
1	शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	50	6.71	3.19	29.88	न्युनतम अधिगम स्तर नहीं

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है, कि शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण में बस्तर जिले के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 6.71 तथा मानक विचलन 3.19 है। यह मध्यमान इस परीक्षण पर प्राप्त अंको के मूल्यांकन मापनी के लिए बनायी गई तालिका के न्यूनतम अधिगम स्तर की नहीं के अन्तर्गत आता है।

अतः कहा जा सकता है कि बस्तर जिले के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि न्यूनतम अधिगम स्तर की नहीं है।

उद्देश्य 2– बस्तर जिले के अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।

परिकल्पना 2– बस्तर जिले के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शोधकर्ता द्वारा विकसित स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (पूर्णांक–25) पर बस्तर जिले के अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंको का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण के लिए प्राप्तांको के आधार मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गयी जो निम्न सारणी– 2 में दिया गया है।

सारणी 2: बस्तर जिले के अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त अंको का मध्यमान एवं मानक विचलन

क्र.	परीक्षण का नाम	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमाान (M)	मानक विचलन	विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों का प्रतिशत	मानक सारणी पर प्राप्त परिणाम
1	अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	50	11.81	3.76	53.28	न्युनतम अधिगम स्तर की ओर अग्रसरित

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है, कि शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण में बस्तर जिले के अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 11.81 तथा मानक विचलन 3.76 है। यह मध्यमान इस परीक्षण पर प्राप्त अंकों के मूल्यांकन मापनी के लिए बनायी गई तालिका के न्यूनतम अधिगम स्तर की ओर अग्रसित है।

अतः कहा जा सकता है, कि बस्तर जिले के अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि न्यूनतम अधिगम की ओर अग्रसित स्तर की है।

उद्देश्य 3– बस्तर जिले के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना। उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शोधकर्ता द्वारा शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

परिकल्पना 3– बस्तर जिले के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना की जाँच हेतु दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा शैक्षिक उपलब्धि पर प्राप्त अंकों की तुलना की गयी। तुलना के लिए टी–अनुपात का मान सारणी– 3 में दिया गया है।

सारणी 3: बस्तर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त अंकों के मध्य तुलना से प्राप्त टी अनुपात

क्र.	परीक्षण का नाम	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मुक्तांश (DF)	t-ratio	सार्थकता स्तर
1.	शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	50	6.71	3.19	98	7.93	0.01=2.63
2.	अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	50	11.81	3.76			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है, कि टी–अनुपात का मान मुक्तांश 98 पर 7.93 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है।

अतः परिकल्पना–3 बस्तर जिले के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है, को अस्वीकार किया जाता है।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है, कि शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की तुलना में अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

व्याख्या

प्रस्तुत शोध में कि बस्तर जिले के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की स्थिति पर अध्ययन किया गया है। इसके विभिन्न उद्देश्यों तदोपरान्त परिकल्पनाओं के आधार पर यह शोधकार्य आगे बढ़ाया गया। आँकड़ों को संकलन तथा विश्लेषण के पश्चात् शोधकर्ता के समक्ष कुछ जानकारियाँ स्पष्ट रूप से प्रकट हुई वे इस प्रकार हैं, कि बस्तर जिले के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। विद्यालयों के सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि विद्यार्थियों में प्रश्न पत्र उत्सुकता से हल की तथा शोधकर्ता द्वारा निर्देश देने के बावजूद भी विद्यार्थियों ने त्रुटियाँ की। कुछ विद्यार्थियों ने प्रश्नावली के सभी प्रश्नों को हल नहीं किया, कुछ ने एक ही प्रश्न के उत्तर के लिए कई विकल्पों को चुना तथा कई प्रश्नों पर विद्यार्थियों ने शब्दों में उत्तर दिया।

निष्कर्ष

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध के निम्न निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं:

- बस्तर जिले के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि न्यूनतम अधिगम स्तर की नहीं है।
- बस्तर जिले के अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि न्यूनतम अधिगम की ओर अग्रसरित स्तर की है।
- शासकीय अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की तुलना में अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

सन्दर्भ सूची

1. बुच, एम.बी.(एडि.1992) *सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन,* न्यू देलही, एन.सी.इ.आर.टी.।
2. गुप्ता, एस.पी. (2004); *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान,* इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
3. गुप्ता, एस.पी. (2005); *भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्या,* इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
4. पाण्डेय, बैजनाथ (2007) पूर्ण साक्षरता के लिऐ वरदान मिड डे मिल कार्यक्रम, *कुरूक्षेत्र,* वर्ष 53 अंक 11, पृष्ठ 10—12।

——==00==——